नीला नहीं होता कंठ नीलकंठ का

डॉ. किशोर पंवार

अपने परिवेश के इन सुन्दर, चंचल, कूदते-फुदकते, चहचहाते नन्हें-नन्हें पक्षियों की ओर अक्सर हमारा ध्यान नहीं जाता। शहर के धूल-धुएं और कोलाहल से हटकर हम ज़रा इनकी दुनिया में झांककर तो देखें। ये अपने आप में असीम संसार समेटे हैं.....।

कुछ दिनों पूर्व मेरी एक मित्र नीलकंठ देखे जाने का ज़िक्र कर रही थी; उसके सुन्दर नीले रंग का, लम्बी, मोटी, कत्थई चोंच का। उसका विवरण के विस्तार में जाना मेरे शक को विश्वास में तब्दील कर रहा था कि उसने जिसे देखा वो नीलकंठ नहीं किलकिला था। जिसे आम तौर पर मच्छीमार भी कहा जाता है।

नीलकंठ बनाम किलकिला

किलकिला एक सुन्दर नीले-फिरोज़ी रंग की चिड़िया है जो अक्सर हमारे घरों के आसपास तारों पर या टी.वी. के एंटीना पर बैठी दिखाई दे जाती है। इसे नीलकंठ समझने की भूल आम तौर पर हो जाती है। वस्तुतः यह पक्षी इतना सुन्दर है कि इसकी ओर ध्यान आकृष्ट होना स्वाभाविक ही है। और फिर जो सुना है नीलकंठ के बारे में, उसका जोड़ भी तो इसी से बैठता है।

मैना के आकार की इस मच्छीमार चिड़िया का सिर व गर्दन चॉकलेटी-भूरी तथा आगे का भाग सफेद होता है। चोंच भारी, नुकीली कत्थई रंग की तथा दुम लम्बी और लाल होती है। पंखों में एक सफेद धब्बा होता है जो उड़ते समय साफ दिखाई देता है। पानी पर इनकी निर्भरता कम है लेकिन शिकार के लिए ये अक्सर नदी-नालों व तालाबों के ऊपर एक ही स्थान पर उड़ती रहती हैं, फिर तुरन्त नीचे गोता लगाकर मछली पकड़ती हैं।

किलकिला में नर मादा एक से होते हैं। घोंसला ज़मीन पर, नदी, नालों के कटे किनारों पर सुरंग के रूप में होता है। दूर से यह गोल छेद जैसा दिखाई देता है। अक्सर उड़ते समय किलकिल किल ..... की आवाज़ करने के कारण इसे किलकिला नाम दिया गया है। अंग्रेज़ी में इसे किंगफिशर कहते हैं।

अब बात करते हैं असली नीलकंठ की जिसे अंग्रेज़ी में ब्लू जे कहा जाता है। कबूतर के आकार का यह एक हल्का नीला भूरा पक्षी है। इसका सिर कुछ बड़ा, चोंच छोटी, काली व भारी, वक्ष भूरा-बादामी, उदर तथा दुम का निचला भाग पीला-नीला होता है। आम धारणा के विपरीत नीलकंठ का कंठ नीला नहीं बल्कि हल्का पीला होता है। उड़ते समय पंखों के गहरे पीले-नीले चमकदार भाग पट्टियों के रूप में दिखाई देते हैं जिससे उड़ते समय यह बहुत सुन्दर दिखाई देता है। इस अवस्था में ऐसा लगता है मानो नीले रंग की चमकदार गेंद हवा में लुढ़क रही हो। इसी गुण के कारण इसे इंडियन रोलर नाम भी दिया गया है।

इसे अक्सर खेतों वाले खुले प्रदेशों में बिजली या टेलीफोन के तारों पर अकेले बैठे देखा जा सकता है। नर मादा में, रंग भेद नहीं पाया जाता। बैठी अवस्था में नीलकण्ठ कतई आकर्षक नहीं होता। केवल उड़ते समय ही यह सुन्दर दिखता है।

तरह-तरह के कीट, इल्लियां, मेंढक व छिपकली नीलकण्ठ का प्रिय भोजन है। कीटों को पकड़ने के लिए ये तेज़ी से ज़मीन पर झपटते हैं फिर उसी स्थान पर आ जाते हैं। कीटों का जैव नियंत्रण कर ये खेती के लिए लाभदायक सिद्ध होते हैं।